निष्कर्ष :-

आज गाँधी के विचार कितने प्रसंगिक हैं, यह सवाल बार-बार उठता है| उचित है कि अब गाँधी के तथा कथित अनुयायि उनके विचारो और आदर्शो को भूल गए हैं , अपितु उनके ठीक उल्टा आचरण कर रहें हैं| गाँधी को फिल्मो में मूर्तियों में तथा संग्रहालयो में देखने की वस्तु समझ कर छोड़ दिया गया है| यहाँ तक की शहरो के चोराहो के बीचो बिच पुतला के रूप में खड़ा कर दिया गया है| उन्हें समझने का कष्ट लोग उठाना नहीं चाहते | प्रतिदिन जब गांधीवाद की हत्या हो रही हैं, तब गाँधी की प्रसिंगता का प्रश्न सामने आता हैं| आज सम्पूर्ण विश्व में साधारतः और भारत में विशेषतः संक्रांति एवं मूल्य हीनता व्याप्त है| इस विकट स्थिति में गाँधी के विचारो का टिमटिमाता दीपक अनवरत प्रकाश दे रहा हैं| आज समाज समृधि और गरीबी, स्वतंत्रता, और शोषण, सामाजिक संबंध तथा अलगाव, विज्ञान एवं अध्यात्म के विरोधाभाष में फसा हैं| जरुरत इस बात की हैं कि हम गाँधी के विचारो का पुनर्मुल्यांकन करें और समसमायिक समाज में उनकी प्रासंगिकता पर सार्थक विचार विमर्श करे| गाँधी जी कोई भविष्यव्यक्ता नहीं थे, लेकिन ऐसा अहसास हो रहा था कि शताब्दियों पूर्व गाँधी ने जिन ओद्योगिक एवं तकनिकी समाज से उत्पन समस्याओ की ओर संकेत किया था वे आज हमारे समाज में मौजूद हैं| मानव एक ओर हिंसा और दूसरी ओर अलगाव के बीच छटपटा रहा है, ऐसी विकट परिस्थिति में गाँधी ने मूल्यों की संस्थापना की पहल की है| जब तक हम सभी लोग जाति, धर्म, उंच-नीच, राग, द्वेष,को भूलकर एक साथ नहीं आएंगे तब तक हमारे समाज में ऐसी स्थिति बनी रहेगी धीरे-धीरे हमारा समाज गाँधी के विचारो को भूलता चला जा रहा है तथा अपने फायदे के लिए किसी भी अन्य को नुकसान पहुचाने में तनिक

भी नहीं हिचक रहा है, जब तक हम अपने अन्दर बैठे हुए अमानवीय व्यवहार को निकाल बहार नहीं फेक लेते तब तक हम एक अच्छे समाज का निर्माण नहीं कर पाएँगे क्योकि युवा ही कीसी भी देश के कर्णधार माने जाते हैं|

सुझाव :-

- प्राथमिक स्तर पर गांधी के विचारो की शिक्षा का पाठ अनिवार्य रूप से पढ़ाया जाना चाहिए|
- गांधी के अनुसार ग्राम के समग्र विकास हेतु कुटीर उद्योग को बढ़ावा देना चाहिए|
- संस्थागत स्तर पर गांधी के चिंतन एवं दर्शन का प्रचार प्रसार कियाया जाना चाहिए|
- पाठ्यक्रम स्तर पर विद्यालयो एवं विश्वविद्यालयों में छात्रों के बीच गांधी के वैचारकी एवं चेतना विकसित करने हेतु हिंदस्वराज को शामिल किया जाना चाहिए|
- शारीरिक श्रम की शिक्षा देश के सभी पाठशालाओ में दिया जाना चाहिए|
- व्यक्ति के जीवन मूल्यो में परिवर्तन की आवश्यकता है|
- शासन की मनोवृत्ति को बदलने की आवश्यकता है|
- लोक मंगल की भावना मे जन सेवको का प्रवेश|
- स्वदेशी वस्तुओ को बढ़ावा मिलना चाहिए|
- कृषि, करघे और दूसरे गृह उद्योगो को संरक्षण दिया जाय और इन्हे बढ़ावा दिया जाय|